# भाषा का लक्षण

दिनांक - ~~28-05~~-27-05-20

भाषा विज्ञान पत्र - पंचम स्नातक: तृतीय खंड

नाम - डॉ. अंजु हिन्दी विभाग पेज - (1)
वैशाली महिला महाविद्यालय

भाषा की परिभाषाओं को विवेचित करने पर भाषा के निम्न लक्षण हमारे सामने आता है —

(1) **मानव मुख से निःसृत** → मानव मुख से निकलने वाले ध्वनि संकेतों के समष्टि अथवा व्यवस्था को भाषा कहते हैं। पशु पक्षियों की बोलियों, उनके अंगों द्वारा भाव प्रकाशन तथा निरर्थक ध्वनि समूह को भाषा नहीं कहा जा सकता है।

(2) **भाव संप्रेषण का साधन** → भाषा के अभाव में मनुष्य संकेतों के द्वारा ही अपने विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति कर सकता है। हम स्वयं कह सकते हैं कि गूँगे व्यक्ति की चेष्टाओं के समान ये संकेत भाव प्रकाशन में सर्वथा अपर्याप्त ही रहते हैं। भाषा के द्वारा ही एक व्यक्ति अपने भावों को अभिव्यक्त करके दूसरों तक पहुँचा सकता है।



Scanned with CamScanner

③ सार्थक एवं विश्लेषणीय ध्वनि-
वे ही ध्वनियाँ भाषा के अंतर्गत आती हैं जो सार्थक होती हैं। जो सार्थक शब्द निर्माण करती हैं तथा जिनका विवेचन विश्लेषण किया जा सकता है।

④ निश्चित ध्वनि रूप -) भाषा की आवृत्ति होती है। इस कारण ध्वनि रूप में निश्चितता का होना अनिवार्य है। ऐसा न होने पर ध्वनियों के अर्थ बदलते रहते हैं और वे एक निश्चित प्रयोजन की अभिव्यक्ति न कर सकने के कारण भाषा नहीं कही जा सकती है।

⑤ पूर्व निर्धारित अर्थ -) भाषा के अंतर्गत आने वाली ध्वनि का अर्थ परंपरागत होता है। उदाहरण के लिए हम काम शब्द को ही लेते हैं। संस्कृत और हिन्दी में इस शब्द का अर्थ एक निश्चित रूप में स्वीकृत है जिसका अर्थ है कार्य अथवा इच्छा। परंतु अंग्रेजी में यही ध्वनि 'काम' एक भिन्न अर्थ शांत की प्रतीति कराती है। स्पष्ट है कि 'काम' शब्द का अर्थ व्यवहृत परंपरा के अनुसार ही गृहीत होगा।

Scanned with CamScanner

(6) सामाजिकता - भाषा का उद्भव और विकास मनुष्य की सामाजिकता के फलस्वरूप हुआ है। पारस्परिक सहयोग संपर्क और विचार-विनिमय की आकांक्षा ने ही भाषा का विकास किया। भाषा व्यक्ति और समाज को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है। मनुष्य समाज में रहकर ही भाषा का अर्जन संवर्धन और विकास करता है।

(7) अर्जित संपत्ति → भाषा मनुष्य को पैतृक संपत्ति के रूप में जन्म से ही प्राप्त नहीं होती है। बच्चे को अनुकरण और अभ्यास के द्वारा भाषा सीखनी पड़ती है। यदि किसी अंग्रेज बच्चे का पालन-पालन हिन्दी भाषी माता-पिता करे तो वह बच्चा हिन्दी भाषी होगा क्योंकि वह जन्म से कोई भाषा नहीं जानता है। वस्तुतः भाषा अर्जन का कार्य तो अनवरत रूप से जीवन पर्यन्त चलता रहता है।

(8) चिर-परिवर्तनशील → भाषा सदैव बदलती रहती है। भाषा का कोई रूप स्थिर या अंतिम रूप नहीं है। भाषा में यह परिवर्तन ध्वनि शब्द, वाक्य अर्थ सभी स्तरों पर होता है। उदाहरण के

Don't cry because it's over, smile because it happened.- Dr. Seuss

Scanned with CamScanner

लिए संस्कृत का 'हस्त' शब्द प्राकृत में हाथ होकर हिन्दी में भी हाथ हो गया है। भाषा का शरीर प्रधानतः उन व्यक्त ध्वनियों से बनता है जिन्हें वर्ण कहते हैं। वर्ण के सहायक अंग हैं हाथ के इशारे, मुख विकृति अर्थात आवाज की अवस्था अर्थात लहजा। अनेक बार व्याकरणों में भाषा को व्याकरण के नियमों में बाँधने का प्रयत्न किया है परंतु भाषा का नियंत्रित रूप प्रयोग से दूर हो गया और व्यवहारिक भाषा आवश्यक परिवर्तन करती हुई गतिशील बनी रही। संस्कृत भाषा इसका ज्वलंत उदाहरण है।

निष्कर्ष यह है कि अभिव्यक्ति के लिए व्यक्त ध्वनि संकेतों को व्यवहार को भाषा कहते हैं। भाषा विज्ञान सदैव इस बात का ध्यान रखता है कि भाषा ~~एक~~ एक सामाजिक क्रिया है वह किसी व्यक्ति विशेष की कृति नहीं है।

समाप्त

Scanned with CamScanner